• श्राद्ध...

ज्येष्ठ अमावस्या

हिंदू शास्त्रों में अमावस्या तिथि पर पितरों के निमित तर्पण, श्राद्ध आदि किया जाता है। हर माह के कृष्ण पक्ष की आखिरी तिथि अमावस्या होती है। ज्येष्ठ माह के कृष्ण पक्ष की अमावस्या तिथि को हिंदू शास्त्रों में बहुत महत्वपूर्ण माना गया है। बता दें कि ज्येष्ठ माह की अमावस्या तिथि के दिन भगवान शनि देव की पूजा का विशेष विधान बताया जाता है। साथ ही, इस दिन तर्पण का भी खास महत्व है।

ज्योतिष शास्त्र के अनुसार पवित्र नदी गंगा जी में स्नान करने के बाद दान आदि करने से पुण्य फलों की प्राप्ति होती है। वैदिक पंचांग के अनुसार इस बार ज्येष्ठ माह की अमावस्या पर शिववास होगा और ऐसे में अगर भगवान शिव का रुद्राभिषेक किया जाए, तो वे जल्द प्रसन्न होते हैं और भक्तों पर कृपा बरसाते हैं। इस साल ज्येष्ठ अमावस्या 6 जून 2024 को मनाई जाएगी। इस दिन पितरों का तर्पण करना विशेष रूप से फलदायी माना गया है।

ज्योतिष शास्त्र के अनुसार

ज्येष्ठ अमावस्या के दिन सुबह जल्दी उठकर स्नान आदि करें और फिर स्वच्छ वस्त्र धारण करें। इसके बाद पितरों का स्मरण करें उन्हें काले तिल, सफेद फूल और कुश से तर्पण करें। मान्यता है कि इससे पितर प्रसन्न होते हैं और व्यक्ति को पितृ दोष से मुक्ति मिलती है। अगर संभव हो, तो घर में ब्रह्माण को बुलाकर पितरों का तर्पण विधिपूर्वक कराएं। पितरों को खीर का भोग लगाए। इस दौरान खीर में इलायची, केशर और शहद जरूर मिलाएं। इस दौरान गोबर से बने उपले से अग्यारी करने के बाद पितरों से क्षमायाचना करें।

अगर आप कुंडली में पितृ दोष से परेशान हैं, और जल्द ही उससे मुक्ति पाना चाहते हैं, तो सुबह स्नान आदि के बाद पीपल के पेड़ की जड़ में जल अर्पित करें। इससे व्यक्ति को पितृ दोष से मुक्ति मिलती है और बिगड़े काम बनने लगते हैं। मान्यता है कि पीपल के पेड़ में ब्रह्मा, विष्णु और महेश तीनों देवताओं का वास होता है। वहीं, इस पेड़ में पितरों का भी वास होता है।

• पूजा-पाठ...

वट सावित्री व्रत

महिलाएं अखंड सौभाग्य की कामना लेकर ज्येष्ठ माह के कृष्ण पक्ष की अमावस्या को वट सावित्री का व्रत रखती हैं। इस बार वट सावित्री का व्रत 6 जून दिन गुरुवार को रखा जाएगा। इस दिन महिलाएं व्रत रखकर वट वृक्ष की पूजा कर देवी सावित्री के पतिव्रता धर्म का स्मरण कर अखंड सौभाग्य की कामना करती हैं इस साल वट सावित्री व्रत 6 जून, गुरुवार के दिन है। वट सावित्री व्रत को सावित्री अमावस्या या वट पूर्णिमा भी कहा जाता है। वट सावित्री के दिन सुहागिनें अपनी पति की लम्बी आयु के लिए व्रत रखती हैं। साथ ही अपने पति की कामयाबी और सुख-समृद्धि के लिए कामना भी करती हैं। वट सावित्री के दिन ही शनि अमावस्या भी है। इसे शनि जयंती भी कहा जाता है। ऐसे में वट सावित्री का महत्व और भी बढ़ जाता है। आप अगर शनिदेव की विशेष कृपा पाना चाहते हैं, तो वट वृक्ष यानी बरगद के पेड़ के साथ पीपल के पेड़ की पूजा भी कर सकते हैं, इससे आपको शनि के नकारात्मक प्रभावों से मुक्ति मिलेगी।

ज्येष्ठ माह की अमावस्या तिथि की शुरुआत 05 जून की शाम को 07 बजकर 54 मिनट से शुरू होगी और इसका समापन 6 जून को शाम 06 बजकर 07 मिनट पर होगी। इस कारण वट सावित्री 6 जून को ही मनाई जाएगी।

अमृत काल समय- 6 जून को सुबह 05:35 से लेकर सुबह 07:16 तक।

पूजन का शुभ मुहूर्त- 6 जून सुबह 08:56 से लेकर सुबह 10:37 तक।

पितरों का तर्पण करने का शुभ समय- दोपहर 12:45 से लेकर दोपहर 1:45 तक।

वट सावित्री व्रत का महत्व- वट सावित्री का व्रत विवाहित महिलाएं पति की लम्बी आयु के लिए रखती हैं। पौराणिक मान्यता है कि इस व्रत को करने से पति की आयु लम्बी होने के साथ रोगमुक्त जीवन के साथ सुख-समृद्धि की प्राप्ति भी होती है। वट सावित्री के दिन महिलाएं सुबह जल्दी उठकर स्नान करती हैं और अखंड सौभाग्य के लिए व्रत रखकर वट वृक्ष की पूजा करने के साथ व्रत सावित्री की कथा भी सुनती है।

वट सावित्री व्रत पूजन विधि-सबसे पहले सुबह उठकर स्नान करके पीले रंग के वस्त्र धारण करें। इसके बाद अपने पति का चेहरा देखें या अगर आपके पति आपसे दूर रहते हैं, तो उनकी तस्वीर देखें। फिर श्रृंगार करके पूजन सामग्री को एक थाल में रखकर पूजा की तैयारी करें। वट वृक्ष के नीच सावित्री और सत्यवान की मूर्ति को स्थापित करें। इसके बाद वट वृक्ष में जल अर्पित करके फूल, भीगे चने, गुड़ और मिठाई चढ़ाएं। इसके बाद वट वृक्ष के चारों तरफ रोली बांधते हुए सात बार परिक्रमा करें। हाथ में चने लेकर वट सावित्री की कथा सुनें या पढ़ें।

शनि जयंती...

शनि जयंती ज्येष्ठ अमावस्या को होती है, क्योंकि उस तिथि को शनि देव का जन्म हुआ था। इस साल की शनि जयंती मेष, वृषभ, मिथुन, कन्या और वृश्चिक राशि के जातकों के लिए शुभ फलदायी हो सकती है।

उस दिन इन लोगों के जीवन में सुखद बदलाव देखने को मिल सकते हैं। ये लोग नई नौकरी, बिजनेस में उन्नति की उम्मीद कर सकते हैं...

इस साल शनि जयंती 6 जून गुरुवार को है। उस दिन शनि देव 5 राशि के जातकों पर खुश रहेंगे। शनि देव के प्रसन्न होने से इन राशि के लोगों के जीवन में खुशहाली आएगी। वे इन लोगों की झोली को खुशियों से भर देंगे। शनि जयंती ज्येष्ठ अमावस्या को होती है, क्योंकि उस तिथि को शनि देव का जन्म हुआ था। इस साल की शनि जयंती मेष, वृषभ, मिथुन, कन्या और वृश्चिक राशि के जातकों के लिए शुभ फलदायी हो सकती है। उस दिन इन लोगों के जीवन में सुखद बदलाव देखने को मिल सकते हैं। ये लोग नई नौकरी, बिजनेस में उन्नति की उम्मीद कर सकते हैं। आइए जानते हैं कि शनि जयंती पर इन 5 राशिवालों के जीवन में क्या सुखद बदलाव हो सकते हैं?

● **मेष :** आपकी राशि के लोगों पर शनि देव की कृपा होगी। आपके करियर के लिए यह दिन अच्छा साबित हो सकता है। आपकी पदोन्नति हो सकती है या फिर इच्छित जगह पर ट्रांसफर पा सकते हैं। सरकार से मदद पा सकते हैं, आपका नेटवर्क बढ़ेगा। धन का निवेश ध्यान से करें। हालांकि इस दिन आप कटु शब्द किसी को न बोलें।

● **वृषभ :** शनि जयंती वाले दिन आप जिस कार्य के लिए मेहनत करेंगे, वह सफल होने की उम्मीद अधिक रहेगी। इस दिन बिजनेस करने वाले लोगों की चांदी रहेगी। मुनाफा कमाएंगे और काम का विस्तार करने की योजना बना सकते हैं। करियर में आगे बढ़ने के अच्छे मौके मिल सकते हैं। इनकम बढ़ाने के लिए आय के नए स्रोत बना सकते हैं। यश प्राप्त होगा।

● **मिथुन :** शनि देव की कृपा से आपकी राशि के लोगों को लाभ होगा। अचानक धन लाभ और परीक्षा में सफलता मिलने का योग है। आपके पराक्रम में बढ़ोत्तरी होगी। बिजनेस में अच्छी डील मिल सकती है, जिससे आपकी आर्थिक स्थिति ठीक होगी. कोई भी कार्य सोच विचार के बाद ही करें, नहीं तो हानि हो सकता है।

● **कन्या :** शनि जयंती वाले दिन कन्या राशि वालों के बैंक बैलेंस और प्रॉपर्टी में बढ़ोत्तरी की उम्मीद है। अचानक धन लाभ होने से मन खुश होगा। कोई चोरी या खोई हुई कीमती वस्तु वापस मिल सकती है। इस दिन कोई खुशखबरी मिल सकती है, जिससे परिवार का महौल खुशियों भरा होगा। पारिवारिक जीवन शांतिपूर्ण होगा।

● **वृश्चिक :** आपकी राशि के लोगों का जीवन सुख और समृद्धि से भरा हो सकता है। धन की कमी दूर होगी, वहीं शनि कृपा से सरकारी काम बनेंगे, रुकावटें खत्म होंगी। संकटों के दूर होने से सफलता मिलनी आसन होगी। बिजनेस प्लान को लागू करने से लाभ के अवसर बढ़ सकते हैं। धन में वृद्धि होने से घर में खुशहाली आएगी। इस दिन किया गया निवेश आपको लाभ दे सकता है।

■ पं. कुलदीप शास्त्री

• शनि जयंती पर...

जरूर करें ये उपाय...

ज्योतिष शास्त्र के अनुसार शनि जयंती के दिन जो व्यक्ति कौवे को रोटी खिलाता है, तो शनिदेव उससे प्रसन्न होकर उसे शुभ आशीर्वाद प्रदान करते हैं। कौवे को शनि देव का वाहन माना गया है, इसलिए आप शनि जयंती के दिन कौवे को भोजन कराते हैं तो शनिदेव की विशेष कृपा आपके ऊपर हमेशा बनी रहती है। अगर किसी जातक की कुंडली में राहु या शनि का दोष लगा है तो शनि जयंती के दिन एक काले रंग के कपड़े में कपूर लें और उसे घर की छत के दरवाजे पर टांग दें। अब सूर्यास्त होने के बाद इस कपूर को लेकर जला दें। ऐसा करने से आपको जल्द ही फायदा मिलना शुरू हो जाएगा। ज्योतिष शास्त्र के अनुसार, शनि जयंती के एक दिन पहले एक कटोरी में सरसों के तेल में कुछ काले तिल डालकर उस कटोरी को शमी के पेड़ के पास रख दें। अब इस दीपक को शनि जयंती के दिन जलाएं। ये उपाय करने से कुंडली में मौजूद शनि की साढ़ेसाती और ढैय्या के प्रभाव को कम किया जा सकता है। इसके अलावा अगर आपके घर में वास्तु दोष उत्पन्न हो गया है तो ये उपाय आपके बहुत काम का हो सकता है। इस उपाय से कुंडली में शनि की स्थिति मजबूत होती है।

• छाया का दान करें...

शनि जयंती पर छाया का दान भी बेहद शुभ माना जाता है। इस उपाय को करने के लिए सबसे पहले एक लोहे की कटोरी में सरसों का तेल और एक सिक्का डालकर रख दें। इसके बाद उस तेल में अपना चेहरा देखकर उसे कटोरी समेत किसी गरीब या फिर शनि मंदिर में दान कर दें। ऐसा करने से जीवन के सभी दुखों से छुटकारा मिलता है।

स्वामी/प्रकाशक/मुद्रक/संपादकः अनल पत्रवाल द्वारा गांव व डाकघर-रजियाणा, तहसील-नगरोटा बगवां, जिला-कांगड़ा-176056, हिमाचल प्रदेश से प्रकाशित एवं एजीएस पब्लिकेशन्स, डी-67, सेक्टर-6, नोएडा-201301, गौत्तम बुद्ध नगर, उत्तर प्रदेश से मुद्रित